

संचालन - ये तो आपने सुना ही होगा "बेटे बिना जीवन ऐसा, इन्द्रपुत्र बिना रंगो जैसा।" पुराने समय में लोग बेटियों को बोझ मानते थे, घर की देहलीज के बाहर कदम भी नहीं रखने देते थे। पर आज के इस युग में बेटियाँ हर उस काम को बढ़-चढ़ कर करती हैं जिसकी आशा एक बेटे से रखी जाती है। बेटियों को दी जाने वाली स्वतंत्रता कुछ हद तक तो ठीक है। पर वही आजादी तब भारी पड़ती है जब वे गलत राह पर चल पड़ती हैं। उन्हें स्वतंत्रता देने से पहले उनके चरित्र को संस्कारों से भर दीजिए। उन्हें ये संस्कार गुरुजनों और विद्वानों से तो मिलते ही हैं परन्तु माता पिता का यह कर्त्तव्य है कि वो बच्चों को बचपन से ही संस्कारित करें। तो किस तरह दिये जायें ये संस्कार। आइए देखते हैं इस नाटिका के माध्यम से।

संस्थान - सुनो साथियों एक कथानक तुम्हको आज सुनाते हैं।
अच्छे संस्कारों की महिमा तुम्हको आज बताते हैं।
माता पिता चाहें तो बालिका डॉक्टर इन्जीनियर बन सकती
माता-पिता चाहें तो बालिका ब्राह्मी सुन्दरी बन सकती
विद्यानिके तन के अभाव में अच्छे संस्कार न आते हैं
अच्छे संस्कारों की महिमा तुम्हको आज बताते हैं।

संचालन - बहुत समय पहले की बात है, एक सुन्दर सा नगर शिवपुर, वहाँ का राजा विक्रमजीत और रानी महालसा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनकी दो पुत्रियाँ बगीचे में खेल रही थीं और राजा उन्हें दूर से ही निहारते हुए प्रसन्नचित्त मुद्रा में खड़े थे। तभी रानी महालसा वहाँ आकर राजा से क्या वार्तालाप करती हैं आइए देखते हैं।

रानी - महाराज। ऐसे सामान्य समय में आपकी प्रसन्नचित्त मुद्रा को देखकर कुछ आश्चर्य सा होता है।

राजा - प्रिये। अब अपनी पुत्रियों को स राज्या सम्बन्धी शिक्षाएँ देने का समय आ गया है। आप देख रही हैं हमारी पुत्रियाँ कितने गोश्व के साथ क्रीड़ा कर रही हैं। मुझे तो इस दिन की प्रतीक्षा है

माँ मेरी पुत्रियाँ मेरा राज्य सम्भालेंगी।

रानी → महाराज ! राज्य की शिक्षा देना तो जरूरी है। परन्तु संस्कार बिना सुविधायें तो पतन का कारण हैं। अतः सर्वप्रथम हमें अपनी पुत्रियों को धार्मिक संस्कारों से सुशोभित करना चाहिए। आखिर आत्म कल्याण भी तो उन्हें इसी भव में करना है।

राजा → महारानी ! (मुस्कराते हुए) आत्म कल्याण करने के लिए तो वृद्धावस्था ही पर्याप्त है परन्तु यदि उत्तराधिकारी नहीं हुआ तो शासन-प्रशासन कैसे चलेगा।

रानी → नहीं महाराज नहीं। ऐसा नहीं है। आयु का क्या भरोसा है, न जाने आयुष्कर्म के निषेक कब सिर जाए। वृद्धावस्था तो समाधिमुख आपकी आता हो तो मैं आपसे कुछ चर्चा वार्ता करना चाहती हूँ। करने के लिए हैं और वचन मानाभ्यास के लिए।

राजा → हाँ, हाँ रानी तुमसे चर्चा करने के लिए तो हम सदैव तत्पर रहते हैं। कहो क्या बात है?

रानी → महाराज ! जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश रात्रि के अंधकार को दूर नहीं करता अपितु सूर्य का उदय होने पर अंधकार तो स्वयं ही दूर हो जाता है। उसी प्रकार बालिकाओं को धार्मिक संस्कार देने पर उनके चहुमुखी विकास के लिए अन्य शिक्षाओं की आवश्यकता नहीं होती। वे स्वतः ही सर्वगुण सम्पन्न बन जाती हैं।

राजा → परन्तु रानी जिस प्रकार चेतनत्व और अचेतनत्व एक जीव में एक साथ नहीं रह सकते उसी प्रकार एक बालिका में धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ राजकीय शिक्षाएँ कैसे रह सकती हैं।

रानी → स्वभाव - विभाव के एक साथ रहने पर भी जब जीव को स्वभाव की कचि होती है तब उसका उपयोग स्वभाव में ही रहता है। शास्त्र और शस्त्र दोनों की शिक्षा देने पर भी यदि उनकी रुचि शास्त्र की ओर है तो उपयोग वहीं अग्रसर हो जाएगा।

राजा → हे महारानी ! आपके विचार तो अति उत्तम हैं। अतः पुत्रियों को आप जैसे संस्कार देना चाहे। (और शही महाराज बेटीयों की धार्मिक शिक्षा के लिए प्रयत्न करेंगे)

संचालन → एक बालिका एक फूल तोड़ने की कोशिश करती है। इतने में माँ उसे फूल तोड़ने से रोककर समझाने का प्रयत्न करती है। आइए देखते हैं माँ उससे क्या कहती है।

रानी - अरे / बेटी तुम यह क्या कर रही हो।

2. बेटी - माँ। यह देखो कितना सुन्दर फूल है। मेरे बालों में लगने के बाद तो और भी सुन्दरता को प्राप्त हो जाएगा।

रानी - बेटी ये भी तुम्हारी तरह जीव है। बेटी। कल्पना करो, यदि तुम्हारे कोमल हाथों को कोई मोड़ तो तुम्हें पीड़ा होती है न। उसी तरह यह पुष्प भी पौधे का एक अंग है उसे तोड़ने से वह भी दुख का अनुभव करता है। और जो दुख का अनुभव करे वह जीव है।

2. बेटी - तो माँ किसी को दुख पहुँचाने से क्या होता है?

रानी - बेटी किसी को दुख पहुँचाना उसका दिल दुखाना हिंसा होती है। और हिंसा एक पाप है।

3. बेटी - अच्छा माँ। कल तो मेरा जन्मदिवस है तो मैं श्वको मिठाईयाँ खिलाकर खुश करूँगी। फिर तो नहीं होगी न हिंसा।

रानी - पर बेटी जन्म तो मेरा होता ही नहीं। तो फिर जन्मदिन किसका?

2. बेटी - पर माँ मेरा तो जन्म हुआ था तभी तो मैं कल 8 वर्ष की हो जाऊँगी।

रानी - बेटी जन्म तो शरीर का होता है। और यह 8 वर्ष की उम्र भी शरीर की ही है। आत्मा तो अजर-अमर है, अनारि अनंत है। इसलिए जन्मदिवस पर ऐसी सोवेंच लेनी चाहिए कि जन्म मरण का अंत हो जाए और यही भावना भानी चाहिए।

अजन्मी हूँ ये देखूँगी, जन्मी था ये भूलूँगी।

जन्म जिसका होता है, मरण उसका होता है

न जन्मी थी न जन्मूँगी, अजन्मी हूँ ये देखूँगी।

2. बेटी - हाँ माँ उदाज से हम प्रतीति लेते हैं कि जन्म मरण का अंत करके ही हम भोगें।

मंत्रालय - इस प्रकार, रानी गदालसा ने अपनी पुष्टियों को संस्कारित किया।

काल बीतता गया और रानी गदालसा ने अन्य चार पुष्टियों को जन्म दिया। और गर्भ से ही उसने उनके संस्कारों में कोई चूक न की। तकरीबन 10 वर्षों बाद रानी गदालसा अपनी बड़ी पुत्री के कक्ष में जाती हैं और द्वार पर खड़े होकर क्या दृश्य देखती हैं आश्चर्य देखते हैं।

1. बेटी - (शीशे के सामने खड़ी होकर) बाह! क्या रूप है मेरा? मुझ जितना सुन्दर तो शायद ही इस धरा पर कोई होगा। कौन होगा वो भाग्य-शाली राजकुमार जिससे से विवाह करूँगी। (माला-हार से ये दृश्य देख रही है और बेटी हार पहनकर दिखाती है।)

1. बेटी - (दिखाते हुए) माँ मैं कैसी लग रही हूँ? ये हीरो का हार मेरे कण्ठ पर कितना शोभायमान हो रहा है। माँ मेरे कंगन भी कितने सुन्दर हैं न।

माँ - बेटी ये शरीर और आभूषण तो शत्रु भंगुर हैं। इससे क्या अपनत्व करना। अनादि से आज तक रूप दिखाने का ही भाव आया है। अपनी सत्व को देखने का भाव नहीं आया है; अब तो हम अपने अपनी सत्व को देखें। कहा भी है - "जिसेके भ्रूंगारों में मेरा यह मंद मंदगा जीवन धुल जाता, अत्यंत अशुचि जड़ काया से इस चेतन का ऐसा नाता।"

बेटी कण्ठ हीरो के हार से नहीं सुगुणों से सुशोभित होता है। क्योंकि हीरो का हार तो व्यर्थ कण्ठ में सुगुणों की माला भूषण

पर पात्र दान से शोभित हो कंगन हथफूल तो हैं 'दूषण'।"

1. बेटी - माँ आपकी बात तो सत्य है परन्तु मेरे सपनों का राजकुमार जो आकाश-माँ - बेटी इतनी संस्कारित होकर भी राजकुमार की चाह क्यों? हमें तो ब्रह्मचर्य की भावना भानी चाहिए।

1. बेटी - परन्तु माँ अभी मेरा ब्रह्मचर्य लेने का मन नहीं है। मुझे तो महलों की रानी बनकर राजसीक सुख भोगने की इच्छा है।

1. रानी - विवाह बंधन में बंध जाने के कारण मैं ब्रह्मचर्य नहीं ले पाई।

परन्तु मैं तुम्हें ऐसे संस्कार दूँगी कि तुम विवाह बंधन में बंधने से पहले ही आर्यिका बन जाओ। मैं स्वयं तो इस मार्ग में नहीं लग सकी परन्तु अपनी पुत्रियों को लैथार कर दूँ ताकि यह धर्म अनंत काल तक इस भारतभूमि एवं भारतवासियों को सुख शांति से जीना सिखाता रहे।

1. बेटी - माँ बचपन से ही आपके इतने निर्मल परिणाम और मेरे इतने विकारी परिणाम, नहीं! कदापि नहीं! आज मैं प्रतिज्ञा लेती हूँ कि मैं ब्रह्मचर्य अवश्य लूँगी।

रानी - वैसे भी जीवन में शारभूत तो एक मात्र शुद्धात्मा ही है। एक तो असाक्षा से भरा यह संसार उसमें भी स्त्री पर्याय पग-पग पर पराधीनताओं को खेलना पड़ेगा। इसलिए, बेटी निर्भय-निशंक होकर स्वाधीनता का मार्ग अपना।

संचालन - अरे! इस कलयुग की दुर्दशा तो देखो - "फे में पांच बेटे जिस को भारी नहीं लगे थे वो मां बेटों को पांच फ्लैटों में भी भारी लगाने लगी है।" बीते जमाने का यह भवण का देश - - - - - कौन मानेगा। यद्यपि माताएँ तो पर्याय के साथ बदलती रही पर धन्य है वो मकालसा जैसी माता जिसने जन्म मरण से दूटकर स्वाधीनता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। रानी मकालसा ने अपनी छहों पुत्रियों को धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत किया। और वे ब्रह्मचर्य व्रत के भावों के साथ यौवन अवस्था को प्राप्त हुई। एक दिन तो हम उनकी तत्वचर्चा के माध्यम से ही उनके भावों को जान लेते हैं।

6-बेटी - बहन! इस जगत में सबसे सुन्दर वस्तु कौन सी है?

3-बेटी - इस जगत में हमारे ब्रह्म स्वरूपी आत्मा से अधिक सुन्दर अन्य कोई वस्तु नहीं। "सर्वत्र सुंदर्यो लोके"।

5-बेटी - बहन! इस जगत में सबसे ज्यादा प्रतापवान कौन हैं?

2-बेटी - इस जगत में सबसे ज्यादा प्रतापवान चैतन्य हीरा है।

4-बेटी - हे भगिनी! इस जगत में सबसे चंचल क्या है?

1-बेटी - इस जगत में सबसे चंचल इस जीव का अयोग है। अपने उपयोग को स्थिर करने का सबसे सुगम उपाय है अपने ब्रह्म स्वरूपी आत्मा में श्रमण करना। इसलिए मैंने निर्णय किया है कि मैं ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर आत्म कल्याण करूँगी।

सभी बेटियाँ हाँ हम भी आपके साथ ब्रह्मचर्य धारण करेंगे।

"तुमारी समझ सोई समझ हमारी हमें ब्रह्मचर्य लेना है।"

1-बेटी - नहीं बहनो! हमें अपने पिता की और राज्य के बारे में विचार करना चाहिए। यदि तुम सभी ने भी ब्रह्मचर्य ले लिया तो राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा। इसलिए तुम राज्य सम्भालो और मैं

आचर्य व्रत धारण करती हूँ।

बेटियाँ - नहीं।

आप बुरी जान छोड़ो हगे जगजाल मोड़ो
तुमहें ही सग ब्रह्मचर्य व्रत धरेंगे - 2।

1-बेटी - जैसी तुम्हारी इच्छा।

6-बेटी - चलो पिताजी और माताजी से आला लेते हैं।

पालन - लगता है बेटियाँ जान चुकी हैं कि दूल्हा राजा तो सादि-
सांत होता है परन्तु जीवराजा अनादि अनंत होता है। इसलिये
यह पड़ी हैं बेटियाँ जीवराजा की श्रोज में। माता पिता की आज्ञा लेने।
7-बेटियाँ - पुणाम पिताजी, पुणाम माताजी।

2-बेटी - पिताजी। हमारी भावना है कि हम अपना शेष जीवन ब्रह्मचर्य
मय बिताएँ।

पिता - (आश्चर्य से) पुरियों में वृद्ध होना जा रहा हूँ यदि तुम सबने
ब्रह्मचर्य ले लिया तो इस राज्य के कुल कीपक का क्या होगा।

बेटी - पिताजी। यह राज्य, जिसके लिए हम अपना जीवन समर्पित
कर रहे हैं, वह तो नश्वर है, अशुभंगुर है, स्थायी रहने वाला नहीं
है।

4-बेटी - हाँ पिताजी।

देख रहे जो आंखों से वह होगा एक दिन नाश।

अविनाशी निजरूप लख जो है तेरे पास।

5-बेटी - हे जनक। असंख्यात प्रकेशी आत्मा ही तो मेरा राज्य है, वही
शाश्वत रहने वाला है। यह राजा अदि के पदों अपद है - 2।

भजन - मोक्ष के प्रेमी हमने कर्मों से लड़ते देखे

मखमल पर सोने वाले, भूमि पर पड़ते देखे।

शौगों को त्याग चेतन, जीवन ये जाये बीता, - 2

दृष्टा न पूरी हुई डोली पर चढ़ते देखे।

मोक्ष के प्रेमी हमने कर्मों से लड़ते देखे ॥

पालन - इस प्रकार वही पुरियों ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर कुछ समय
पश्चात् आर्यिका दीक्षा ली और वन में निवास करने लगी। वास्तव

में "वनवासी" व्यवहार कहते हैं, जिस में निवसन होते हैं।" संस्कृत
एक ओर पुत्रियाँ अपनी अस्ति की मस्ती में मस्त हैं। और दूसरी
ओर राजा विक्रमजीत को अपनी पुजा के प्रशासन की चिंता स्वार जा
रही है। आइए देखते हैं राजा अपनी चिंता किस प्रकार व्यक्त
करता है।

रानी - महाराज! क्या मैं आपकी आकुलता का कारण जान सकती हूँ।
जान - रानी! तुम कितनी निर्दयी हो, क्या तुम्हें मुझ पर दया नहीं
आती। मैं बृद्ध होता जा रहा हूँ। मैं भी अपना कल्याण करना
चाहता हूँ। और तुम हर पुत्री में ऐसे संस्कार भर देती हो
कि वह उत्तराधिकारी बनने की उम्र होते ही ब्रह्मचर्य-व्रत
धारण कर लेती है।

रानी - यह मनुष्य की पर्याय और उसमें भी जैन कुल के साथ अच्छे
संस्कार ये तो उच्चोत्तर दुर्लभ हैं। पुत्रियों के ब्रह्मचर्य व्रत
पर तो आपको प्रसन्न होना चाहिए। कहा भी है न -
यह मानुष पर्याय, सकुल स्तुतिवौ जिनवाणी
इह विधि गण न मिलै, स्तुमाणि ज्यो उदयि समानी।

राजा - परन्तु रानी! मैं एक न्याय प्रिय राजा हूँ मुझे अपने राज्य
का प्रशासन भी तो चलाना है। इसलिए मैंने निर्णय कर
लिया है कि अब जो संतान होगी उसका तुम्हें मुख भी न
देखने दूँगा। पालन पोषण तुम नहीं करोगी। ताकि मेरे सर से
राज्य का बोझ उतर सके।

रानी - हे स्वामी! मैं भी चाहती हूँ कि आपकी दृष्टि पुत्रियों मार्ग में लगी
है, आप भी उसी मार्ग का अनुसरण करें। मैं अब को बार जंगल
को ऐसे संस्कारों से संस्कारित करूँगी कि वह शीघ्र ही आपकी
उत्तराधिकारी बनेगी। लेकिन कृपा कर मुझे संतान के पालन पोषण
से वंचित न करें।

राजा - (रोष में) मेरा निर्णय अंतिम निर्णय है।
[इतना कहकर राजा वहाँ से प्रस्थान कर लेता है।]

रानी → (विचार करते हुए) ऐसी संतानों का पालन पोषण जो अनार्यिक से किया, यदि संतान मेरी है तो शाश्वत क्यों नहीं रहती। इस भव में एक बार आत्मा का बालन पोषण कर लिया तो अगले अनंत भवों में नहीं स्तनना पड़ेगा।

संचालन → हम जब भी किसी महिला शासिका को देखते हैं तो हमारी प्रतिक्रिया आश्चर्यजनक क्यों हो जाती है। क्या हम ऐसा मानते हैं कि महिलाएँ शासन नहीं कर सकती। तो यह मान्यता गलत है। इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो ऐसी कई महिलाएँ सामने आएंगी जिन्होंने शासन किया है। उदाहरण के तौर पर रजिया सुल्तान और देवी अहिल्या बाई। वर्तमान समय में भी हमारी इस मान्यता को मजबूत प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने पांच साल शासन कर और किशन बेदी ने I.P.S. अप्सर बनकर गलत सिद्ध कर दिया है। कुछ ऐसी ही रक्षा राजा विक्रमजीत की है। आइए देखते हैं वह अपनी सातवीं पुत्री को शासिका बनाने के लिए कैसे चत्तमा से संस्कारित कराता है।

[राजा पुत्री को धाय माता को सौंप देता है]

राजा → इस पुत्री को मैं तुम्हें सौंपता हूँ कि इसकी रग रग को न्याय नीति और प्रजाप्रेम से भर दो। इसे ऐसे संस्कार देना कि यह कभी आर्थिका - प्रत-धारण करने के बारे में विचार भी न करे।

धाय → जो आज महाराज! आपकी पुत्री अब आपके पदचिन्हों पर ही चलेगी।

(कुछ सालों बाद) धाय माता पुत्री को क्या संस्कार देती है देखते हैं।

धायमाँ → जानती हो राजकुमारी

"बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी शिवपुर की ही रानी थी
शूब लड़ी मरदानी वह तो साँसी वाली ^{रिक्सा} समी थी।"

राजकुमारी इसी तरह तुम्हें भी अपने पिता के राज्य को सम्भालना है।

संचालन → "धाय के संग पढ़ती थी वह धाय के संग खेलती थी"

बरछी ढाल कृपाण क्यारी उसकी यही सहेली थी।"

राज्य संस्कारों में पली बड़ी राजकुमारी अपने पिता से अस्त्र-शास्त्र चलाने की कलाओं में निपुण हो जाती है। एक दिन पिता अपनी पुत्री

से क्या वार्तालाप करता है और देखते हैं -

पिता-न पुत्री ! क्या तुम जानती हो मैंने तुम्हें तुम्हारी माँ से दूर क्यों रखा है ?

पुत्री-न शायद इसलिए कि मेरी माँ बुरी है।

पिता-न नहीं बेटी तुम्हारी माँ तो अच्छी है परन्तु तुम जानती हो तुम्हारी तुमसे पहले दो बहनें और भी।

पुत्री-न फिर क्या हुआ पिताजी ?

पिता-न तुम्हारी माँ के धार्मिक संस्कारों से तुम्हारी बहनों ने वृक्षचर्य व्रत अंगीकार कर लिया। किसी ने भी मेरे बारे में विचार नहीं किया परन्तु पुत्री मुझे तुमपर पूर्ण विश्वास है तुम इस राज्य का करोबार अवश्य सम्भालोगी।

पुत्री-न हाँ पिताजी मैं आपको वचन देती हूँ कि मैं ही इस राज्य की उत्तराधिकारी बनकर आपके कुल का दीपक कभी बुझने नहीं दूँगी।

पिता-न वाह ! बेटी तुमसे ऐसी ही पुत्री की आकांक्षा थी।

संचालन-न ऐसी ही राज्य की शिक्षाएँ ग्रहण करते वह 18 वर्ष की आयु में पदार्पण करती हैं। एक बार राजा युद्ध की तैयारियाँ कर रहा था तभी पुत्री वहाँ आकर राजा से क्या कहती हैं -

पुत्री-न पिता जी आप मे अस्त्र-धारत्र कहां लेकर जा रही रहे हैं।
राजा-न बेटी मुझे बहुत जरूरी युद्ध लड़ने जाना है। मुझे इस युद्ध में विजयी होना अनिवार्य है।

पुत्री-न मेरे होते हुए आप इस युद्ध में क्यों जाएंगे, आखिर आपने मुझे युद्ध लड़ने की शिक्षाएँ इसी दिन के लिए तो हीं थीं।

राजा-न परन्तु बेटी दुनिया क्या कहेगी कि कुत्र के न होने से राजा ने घर की बेटी को युद्ध करने भेज दिया।

पुत्री-न नहीं पिताजी। सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग। पिताजी चाहे कुछ भी हो जाए मेरे होते मैं आपको इस उम्र में युद्ध लड़ने नहीं जाने दूँगी। मैं जाऊँगी और आपके आशीर्वद से जीतकर भी आऊँगी।

राजा-न ठीक है बेटी। विजयी भव, परन्तु बेटी तुम प्रथम बार युद्ध लड़ने जा रही हो तो एक बार अपनी माता से मिल लेना चाहिए।
उम्मे

पुत्री - जो आता पिला जी /

पुत्री - मां, अरे मां आप कहाँ हैं ?

रानी - अरे वाह बेटी / तुम कितनी बड़ी हो गई हो / और तुम्हें पिलाजी ने मुझसे मिलने की आज्ञा दे दी /

पुत्री - हाँ मां / आप जानती हो पिलाजी कह रहे थे कि तुम्हारी मां बहुत धार्मिक हैं तो तुम्हें उनका आशीर्वाद ले लेना चाहिए /

रानी - अच्छा बेटी ! पिलाजीने ऐसा कहा !!! पर अन्यायक ---

पुत्री - मां मैं पंचम बार युद्ध लड़ने जा रही हूँ / इसलिए मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए कि मैं इसमें जीतकर आऊँ /

रानी - हाँ पुत्री मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है / तुम भी अपने पिला के समान शूरवीर बनो, पुजा का पालन करो / लेकिन मेरी बात याद रखना, मैं आशीर्वाद के रूप में तुम्हारे गले में यह पत्र बांध रही हूँ / यदि कोई विपत्ति आ जाए तो इसे खोलकर पढ़ लेना इसमें हर विपत्ति का समाधान लिखा है /

बेटी - ठीक है मां / अब आशीर्वाद हीजिए मैं युद्ध के लिए प्रस्थान करती हूँ /

रानी - श्री विजयी भवः /

अंजालन - छोड़े पर सवार राजकुमारी अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित अपनी सेना के साथ रण भूमि में प्रस्थान करती हैं / और दूसरी ओर राजा मोहेंद्र अपनी सेना के साथ वहाँ उपस्थित हैं / राजा मोहेंद्र को जब एक स्त्री के साथ युद्ध करना पड़ेगा यह देखकर वह अपने विचार व्यक्त करता है /

विपक्षी राजा - क्या हुआ राजा विक्रमजीत, क्या स्वर्ण महलों में नुडियाँ पहन कर बैठे हैं ? जो एक पुत्री को युद्ध लड़ने भेज दिया /

पुत्री - महाराज महाराज नुडियाँ पिलाजी ने पहनी हैं या आप पहनेंगे इस बात निर्णय में युद्ध के पश्चात् ही होगा /

वि-राजा - आखिर विक्रमजीत की ऐसी कौन सी मजबूरी थी कि उन्हें अपने प्राणों से प्यारी बेटी को युद्ध करने भेजना पड़ा /

पुत्री - महाराज / पिलाजी ने विचार किया कि आपसे जीतने के लिए तो उनकी पुत्री ही पर्याप्त है इसलिए उन्होंने रण भूमि में आने का

कर न किया। तो युद्ध प्रारंभ करें महाराज।

संचालन → आकाश को गंजायमान करती हुई शैखनाद के ध्वनि के साथ युद्ध प्रारंभ हुआ। परन्तु जो-जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसि वीरा के अन्होनी होसि नहि कबहुँ काहे होत अधीरा रे।

पुर्ण → (विचार मग्न, चिन्तित) अब तो युद्ध जीतने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे। हे प्रभु! अब मैं क्या करूँ। ओरे! मैं ने जो पत्र गले में बाँधा था उसे पढ़ लेती हूँ। हो सकता है उसमें कुछ युद्ध जीतने का उपाय मिल जाए। देखती हूँ उसमें क्या लिखा है। निश्चय से मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ, "अहमेवको खलु सृष्टो, हर्निस्तानमय हूँ, सदा अरूपी हूँ, किंचित मात्र भी अन्य पर द्रव्य परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है। ये निश्चय है।

ओ हो!!! मैं ये क्या करने जा रही थी। इतनी हिंसा, इतनी लड़ाई आओ। मैं ये क्या करने जा रही थी। इतनी हिंसा, इतनी लड़ाई। मैं ने जो पत्र गले में बाँधा था उसे पढ़ लेती हूँ। हो सकता है उसमें कुछ युद्ध जीतने का उपाय मिल जाए। देखती हूँ उसमें क्या लिखा है। निश्चय से मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ, "अहमेवको खलु सृष्टो, हर्निस्तानमय हूँ, सदा अरूपी हूँ, किंचित मात्र भी अन्य पर द्रव्य परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है। ये निश्चय है।

संचालन → इस प्रकार शर्मा महालसा की सातवीं पुत्री भी गर्भ के संस्कारों के निमित्त से स्वाधीनता के पथ पर निकल पड़ती है।

भजन → सफ़क करी ले मानव नू अवतार, आत्म तू धारो विचार करि ले

08

जहाँ राग द्वेष की गंध नहीं बस